''ॐ'' का प्रादुर्भाव - एक वैज्ञानिक विश्लेषण

विज्ञान के युग में अब कथाओं एवम् प्रतीकों के मूल भाव का स्पष्टीकरण आवश्यक हो गया है, क्योंकि नयी पीढ़ी द्वारा आज सभी कुछ प्रमाणों के आधार पर ही जाना एवं समझा जाता है, अतएव निम्न पंक्तियों में वैज्ञानिक दृष्टि से यह समझने का प्रयास करेंगे, कि ''ॐ'' ध्वनि हिन्दू धर्मशास्त्रों की सबसे मूल्यवान धरोहर कैसे बनी एवं उसे सर्वोच्च पदवी क्यों प्रदान की गयी ?

यह तो सर्वविदित ही है, कि वैदिक-धर्म में ''ॐ'' ध्वनि को अनादिकाल से ही परमात्मा के पवित्रतम नाम के रूप में जाना जाता रहा है तथा वैदिक धर्मानुयायियों के सभी सम्प्रदाय ''ॐ'' ध्वनि एवम् ''ॐ'' को समान रूप से आदर भाव से पूजते आ रहे हैं। गीता में कहा है- *''ओमितिएकाक्षरम् ब्रह्म'' (8/13)* अर्थात् ब्रह्म का एक अक्षर का नाम ''ॐ'' है । यह एक अक्षर का नाम इतना 'अहम्' है, कि सभी मंत्रों के पूर्व इसको उच्चारण किए जाने का विधान है ।

इन बातों को समझने के लिए, हमें सर्वप्रथम अपने विश्व (Universe) की रचना को समझना होगा । हमारी पृथ्वी हमारे सौरपरिवार की सदस्य है और हमारा सूर्य दो सौ बीस किलोमीटर प्रति सेकण्ड की गति से चलता हुआ अपने पूरे परिवार सहित अर्थात् नव ग्रहों समेत आकाशगंगा के केन्द्र का 22½ करोड़ वर्ष में एक चक्कर पूरा करता है । हमारी आकाशगंगा में लगभग एक खरब तारे अर्थात् सूर्य हैं *(कृपया हमारी आकाशगंगा का चित्र* देखें)। बहुत से तारे तो हमारे सूर्य से भी बड़े हैं । विश्व में हमारी आकाशगंगा जैसी लगभग दो सौ अरब आकाशगंगाऐं हैं । विज्ञान का मानना है, कि ये सारी आकाशगंगाएं अपने जन्म अर्थात् महानाद (Big Bang) के पश्चात् निरन्तर औसतन 20,000 मील प्रति सेकण्ड की गति से अनन्त की ओर भागी जा रही हैं, जबकि भारतीय मनीषियों का कथन है, कि **सृष्टि अनादि है अर्थात् इसका कभी जन्म ही नहीं हुआ । यह तो सदैव से ऐसी ही है तथा आकाशगंगाएं किसी केन्द्र की सतत परिक्रमा कर रही हैं, अनन्त की ओर भागी नहीं जा रहीं ।**

ऐसा प्रतीत होता है, कि सतयुग काल में भारतीय वैज्ञानिकों ने ध्यानावस्था में सृष्टि के सृजनकर्त्ता की खोज करते-करते सतत गूँजती ''ॐ'' ध्वनि को सुना एवं आकाशगंगा के तारा समूहों की रचना द्वारा बने ''ॐ'' के चित्र का अपने चित्तपटल पर साक्षात्कार भी किया। तभी से सभी ऋषियों ने एक मत से ''ॐ'' ध्वनि को सृजनकर्त्ता (परमात्मा) का नाम घोषित कर दिया तथा ''ॐ'' का चित्रांकन करके हमें एक ठोस आधार पर ध्यान एकाग्र करने हेतु परामर्श भी दिया, क्योंकि इसके अतिरिक्त उस निराकार अव्यक्त परमात्मा को जानने का कोई अन्य उपाय ही न था ।

क्योंकि हमारी पृथ्वी अपनी धुरी पर तथा सूर्य के चारों ओर भी निरन्तर घूम रही है

तथा पृथ्वी के चारों ओर 400 कि.मी. तक वायुमण्डल भी है; फिर भी हमको कोई ध्वनि नहीं सुनाई पड़ती, परन्तु इस इन्द्रियातीत ध्वनि को ऋषियों ने समाधि अवस्था में सुना। यह ध्वनि बड़ी ही संगीतमय थी। इसीलिए इसका नाम **'उद्गीथ'** रखा गया अर्थात् ऊपर होने वाला **'मधुरगीत'**।

उन वैज्ञानिकों ने अपने शोध को **'प्रणव'** नाम भी दिया, जिसका अर्थ है **'प्राण का वपु'** अर्थात् **'ऊर्जा का भण्डार'**। जैसा कि हम सभी जानते हैं, कि आकाशगंगाओं की गति के कारण निरन्तर 'गतिजऊर्जा' (Kinetic Energy) प्रवाहमान हो रही है और उसका माप = ½ Mv^2 = ½ द्रव्य x गति^{2}। चूँकि कोई भी ऊर्जा अन्य सभी प्रकार की ऊर्जाओं में बदल सकती है, अतएव **''ॐ''** द्वारा उत्पन्न **'गतिज-ऊर्जा'** से सम्पूर्ण सृष्टि का सृजन एवम् पालन होता है।

यह **''ॐ''** ध्वनि प्राकृतिक रूप से उत्पन्न हो रही है जो अनादिकाल से है एवं अनन्त काल तक रहने वाली है, अतएव इसी ध्वनि को सर्वोच्च पदवी प्रदान की गयी और इसे सभी मन्त्रों के पूर्व प्रयोग करने का विधान बना दिया गया। कालान्तर में दूसरे मतावलम्बियों ने भी **''ॐ''** की महिमा को समझ कर इसके उच्चारण में थोड़ा परिवर्तन करके **'आमीन'** तथा **'ओमीन'** नाम रखकर अपने-अपने मतों में शामिल कर लिया। परमात्मा के और भी अनेक नाम हैं, परन्तु वे साहित्यिक नाम बाद में रखे गये।

'ॐ' ध्वनि महाकाश में प्राकृतिक रूप से सतत् गूँज रही है, अतएव यदि साधक अपने मन को ध्यान एवम् जप द्वारा इस ध्वनि के साथ एकाकार करने का अभ्यास करता है, तो उसका चित्त इन ध्वनि तरंगों से अनुप्राणित हो उठता है एवम् साधक को अखण्ड आनन्द की अनुभूति हो जाती है।

हमारी आकाशगंगा

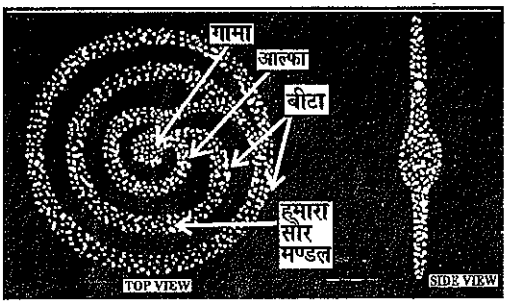

अन्य आकाशगंगा

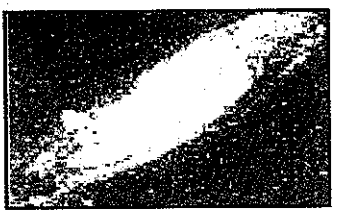

1. आकाशगंगा की लम्बाई = एक लाख प्रकाश वर्ष 2. हमारे सूर्य की केन्द्र से दूरी = 32,000 प्रकाश वर्ष 3. एक प्रकाश वर्ष = 94 x 10^{11} कि.मी.

नोट :- 1. कृपया चित्र को ध्यान से देखें। तारा समूहों की रचना कुछ इस प्रकार से है, कि बाहर के दो सर्पिल घेरों (ब्रह्मलोक) को निकाल दें, तो **''ॐ''** जैसा चित्र स्वतः बन रहा है। 2. केन्द्र में शिवलिंग जैसा है। 3. गायत्री मंत्र के प्रथम चरण में **''ॐ''** की उत्पत्ति का शोध सन्निहित है। (कृपया गायत्री मंत्र के लेख को अगामी पृष्ठों पर देखें।)

हरिः ॐ तत् सत् !